डॉ रूचिरा ढींगरा
एसोसिएट प्रोफेसर,हिंदी विभाग
शिवाजीकालेज,दिल्लीविश्वविद्यालय

प्रेमचंद और कर्मभूमि मूल समस्या

प्रेमचंद का कार्यक्षेत्र---

प्रेमचंद साहित्यिक जीवन का आरंभ 1901 से पर उनकी पहली हिन्दी कहानी सरस्वती पत्रिका के दिसंबर अंक में 1915 में सौत नाम से प्रकाशित हुई और १९३६ में अंतिम कहानी कफन नाम से । उनसे पहले हिंदी में काल्पनिक, एय्यारी और पौराणिक धार्मिक रचनाएं थी। प्रेमचंद ने हिंदी में यथार्थवाद की शुरूआत की। " भारतीय साहित्य का बहुत सा विमर्श जो बाद में प्रमुखता से उभरा चाहे वह दलित साहित्य हो या नारी साहित्य उसकी जड़ें कहीं गहरे प्रेमचंद के साहित्य में दिखाई देती हैं।"

- पहला उपलब्ध उपन्यास उर्दू उपन्यास 'असरारे मआबिद' है।
- दूसरा उपन्यास 'हमखुर्मा व हमसवाब' जिसका हिंदी रूपांतरण 'प्रेमा' नाम से 1907 में प्रकाशित हुआ।
- गोदान = कालजयी रचना . कफन अंतिम कहानी है।

प्रेमचन्द---“ साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है।“

प्रेमचंद जीवन पर आरोप---

कमलकिशोर गोयनका ['प्रेमचंद : अध्ययन की नई दिशाएं']

- प्रेमचंद ने अपनी पहली पत्नी को बिना वजह छोडा और दूसरे विवाह के बाद भी उनके अन्य किसी महिला से संबंध रहे (जैसा कि शिवरानी देवी ने 'प्रेमचंद घर में' में उद्धृत किया है)
- प्रेमचंद ने 'जागरण विवाद' में विनोदशंकर व्यास के साथ धोखा किया
- प्रेमचंद ने अपनी प्रेस के वरिष्ठ कर्मचारी प्रवासीलाल वर्मा के साथ धोखाधडी की
- प्रेमचंद की प्रेस में मजदूरों ने हडताल की
- प्रेमचंद ने अपनी बेटी के बीमार होने पर झाड-फूंक का सहारा लिया आदि. इंसानी कमजोरियों जाहिर- साहित्य के मूल्यांकन पर असर नहीं ।

प्रेमचंद के उपन्यास : मुख्य समस्या ---

- 'सेवासदन' (1918) [मूल 'बाजारे-हुस्न' नाम उर्दू] उपन्यास से हिंदी उपन्यास की दुनिया में प्रवेश किया।, एक नारी के वेश्या बनने की कहानी मुख्य समस्या भारतीय नारी की पराधीनता है।
- 'प्रेमाश्रम'-किसान जीवन पर लिखा [हिंदी का संभवतः पहला उपन्यास] उपन्यास 'प्रेमाश्रम' [उर्दू में 'गोशाए-आफियत' नाम से तैयार] (1921) यह अवध के किसान आंदोलनों के दौर में लिखा गया।
- इसके बाद 'रंगभूमि' (1925), 'कायाकल्प' (1926), 'निर्मला' (1927), 'गबन' (1931), 'कर्मभूमि' (1932) , 'गोदान' (1936) तक पूर्णता ।

'कर्मभूमि' में प्रेमंचद अंत तक आदर्श का दामन थामते हैं।

कर्मभूमि उपन्यास/ मूल समस्या:-

- ✓ प्रेमचन्द का कर्मभूमि उपन्यास एक राजनीतिक उपन्यास है जिसमें विभिन्न राजनीतिक समस्याओं को कुछ परिवारों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

ये परिवार यद्यपि अपनी पारिवारिक समस्याओं से जूझ रहे हैं तथापि तत्कालीन राजनीतिक आन्दोलन में भाग ले रहे हैं।

- ✓ उपन्यास का कथानक काशी और उसके आस-पास के गाँवों से संबंधित है। आन्दोलन दोनों ही जगह होता है और दोनों का उद्देश्य क्रान्ति है। किन्तु यह क्रान्ति गाँधी जी के सत्याग्रह से प्रभावित है। गाँधीजी का कहना था कि जेलों को इतना भर देना चाहिए कि उनमें जगह न रहे और इस प्रकार शक्ति और अहिंसा से अंग्रेज सरकार पराजित हो जाए। सभी पात्र जेलों में ठूस दिए जाते हैं।
- ✓ क्रान्ति के व्यापक पक्ष का चित्रण करते हुए तत्कालीन सभी राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं को कथानक से जोड़ते हैं।

यथार्थवादी तरीके से समस्याओं का चित्र :-

- ❖ निर्धनों के मकान की समस्या
- ❖ अछूतोद्धार की समस्या
- ❖ अछूतों के मन्दिर में प्रवेश की समस्या
- ❖ भारतीय नारियों की मर्यादा और सतीत्व की रक्षा की समस्या
- ❖ ब्रिटिश साम्राज्य के दमन चक्र से उत्पन्न समस्याएँ
- ❖ भारतीय समाज में व्याप्त धार्मिक पाखण्ड की समस्या
- ❖ पुनर्जागरण और नवीन चेतना के समाज में संचरण की समस्या

राष्ट्र के लिए आन्दोलन करने वालों की पारिवारिक समस्याएँ आदि

कर्मभूमि की विशेषता–

- ❖ समस्याओं का चित्रण सत्यानुभूति से प्रेरित होकर किया है
- ❖ तत्कालीन राष्ट्रीय सत्याग्रह आन्दोलन सजीव हो जाता हैं।
- ❖ घटनाओं की बहुलता > उपन्यास बोझिल / नीरस नहीं ।
- ❖ आदर्शोन्मुख यथार्थवाद से ओतप्रोत
- ❖ कर्मभूमि प्रेमचन्द की एक प्रौढ़ रचना है